Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Referred Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

August-2022

ISSUE No- (CCCLVIII) 358- D

Rural Development

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr. Baliram Pawar
Head, Department of Sociology
Mahatma Phule College Kingaon Latur
Maharashtra

Editor
Lt.(Dr.) Vilok Singh
Associate Professor
Dept.of Sociology
Swami Sahjanand Snatkottar Mahavidyalaya
Ghazipur Uttar Pradesh

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Scanned with OKEN Scanner

INDEX -D

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Rural Development Through Panchayati Raj Institutions in Assam.	Jayanta Madhab Borah	1
2	Role of Education in Rural Development of India.	Dr.Daisy rani Chutia	5
3	Challenges and Strategies of Rural Development in Assam : A Brief Study	Dr. Atowar Rahman	8
4	Marketing of Rural Products	Smt.Pushapabai. A.Kore	12
5	Rural Development And Education With Special Reference To Uttarakhand	Dr. Amita Srivastava	16
6	Mahatma Gandhi and Rural Development	Jolly Suresh Sonkar	20
7	Democratic Decentralization And Rural Development: A Framework At Understanding Through the Assam Panchyatiraj Act.	Dr. Kakali Borah	24
8	Problems Of Youth In Rural Area: Special Reference To Tinsukia District, Assam	Krishna Das	27
9	Nirmal Gram Puraskar	Dr. Rajnana A. Shringarpure	30
10	Inclusive Development Issues And Challenges: A Study Of Telangana State	Ramavath Sujatha	33
11	Role of education in rural development in assam: Prospects and perspective	Abdul Amin	37
12	Role of education in India's Rural development	Dr. Sunita Yadavrao Patil	41
13	Rural Development And Women	Dr. Salma Ab. Sattar	44
14	Watershed Management Programme and Rural Development	Pandurang Varhade1 , Deepanjali Jambhale	49
15	Forest fires in Uttarakhand: Emergence of a new calamity and a threat to rural development	Dr. Savita Chauniyal	56
16	भारतीय संगीत का सांस्कृतिक अवलोकन (ग्रामीण क्षेत्र के संदर्भ में)	डॉ. अनुपमा सक्सेना	62
17	ग्रामीण परिपेक्ष्य में महिलाओं की भूमिका एवं विकास	Dr. Vibha pandey	65
18	ग्रामीण अंचल में संगीत का स्वरूप	डॉ. प्रियदर्शिनी उपाध्याय	69
19	भारत वर्ष का पारम्परिक लोकसंगीत	डॉ. प्रभा वार्ष्णेय	72
20	पंचायत राज्य आणि ग्रामीण नेतृत्वाचा विकास	प्रा. अर्चना रमेश पगार	76
21	उत्तर प्रदेश ग्रामीण क्षेत्र में प्रचलित लोक सांगीतिक विधाऐं व गीत	डॉ. ऋतुपर्णा बर्मन गुप्ता	84
22	भारत का ग्रामीण विकास	आकांक्षा सिंह	89
23	ग्रामीण विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका	डॉ. सीमा कौशिक	93

Scanned with OKEN Scanner

24	गाँधी का ग्राम स्वराज डॉ.राजेश कुमार सिंह	96
25	ग्रामीण विकास में लोक संस्कृति की भूमिका डॉ.संजीब सिंह नेगी	100
26	ग्रामीण विकास में ग्रंथालय की भूमिका मध्यप्रदेष के अलिराजपुर जिले के सन्दर्भ बी.एल.भूरा	103

Scanned with OKEN Scanner

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, 358 (CCCLVIII) D
ISSN : 2278-9308
August, 2022

गाँधी का ग्राम स्वराज

डॉ.राजेश कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग स.भ.सिं.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर-ऊधम सिंह नगर उत्तराखण्ड ,Email : drrajeshsingh72@gmail.com , Mobile : 9454065041

सार (Abstract)

महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज की अवधारणा भारतीय समाज की जड़ों की गहराइयों की वास्तविक समझ से उत्पन्न हुई थी। गाँधी ने भारत के समाज को उसकी आवश्यकताओं, विशेषताओं और उसकी मूलभूत संरचना के अपरिहार्य तत्वों के परिप्रेक्ष्य में समझा था, इसलिए गाँधी के लिए भविष्य का भारत पश्चिमी आधुनिकता के चकाचौंध से आप्लावित नगरों में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की विरासत सँजोये गावों में निवास करता था। इसी से प्रेरित होकर गाँधी ने स्वतंत्रता से बहुत पहले भावी भारत के अपने स्वप्न के रूप में ग्राम स्वराज की संकल्पना रखी थी। गाँधी का ग्राम स्वराज अपने आप में पूरी तरह से आत्मनिर्भर गाँव की अवधारणा थी, जिसमें गाँधी ने ग्रामीण पुनर्निर्माण के माध्यम से भावी भारत के विकास की कल्पना की थी। ग्राम स्वराज ग्रामीण पुनर्निर्माण का एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत करता है, जिसमें कि गाँधी सभी के विकास की कल्पना का स्वप्न संजोते हुए व्यक्ति को आर्थिक व्यवस्था के केंद्र में रखकर चलने की बात करते हैं। वर्तमान में पूरी दुनिया में चल रहे विकास के तमाम मॉडलों ने असंतुलित विकास की जो स्थिति पैदा की है, उसने विकास के वैकल्पिक मॉडलों की प्रासंगिकता पर विचार करने को बाध्य किया है। सतत विकास की संकल्पना के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज की कल्पना कहाँ तक प्रासंगिक है , प्रस्तुत शोधपत्र में हम इसी पर विचार करेंगे।

मुख्य शब्द: ग्राम स्वराज, सतत विकास

प्रस्तावना -

सामान्य तौर पर आज के समय में लोग ग्रामीण जीवन की तुलना में नगरीय जीवन शैली को अधिक महत्व देते हैं। इसका कारण है कि लोग नगरों की भौतिकता की चकाचौंध और आधुनिकता के आकर्षण को ग्रामीण जीवन शैली पर वरीयता देते हैं। गाँव के जीवन में आधुनिक सुख सुविधाओं का अभाव, जीविकोपार्जन के व्यापक अवसरों की अनुपलब्धता, स्वास्थ्य, यातायात और शिक्षा के साधनों का अभाव- वहाँ के निवासियों को नगरों की तरफ पलायन को बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त नगरों के औद्योगीकरण के कारण वहां पर रोजगार के अवसरों की बहुलता भी गांव के लोगों को शहर की तरफ आकर्षित करती है। जनसँख्या वृद्धि के कारण गाँव के सीमित संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव भी लगातार बढ़ रहा है। गाँव में लोगों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि ही है। जनसंख्या बढ़ने के साथ कृषि पर आश्रित लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसे में लोग बेहतर जीवन अवसर और रोजगार की तलाश के लिए गाँवों से शहरों की तरफ पलायन को मजबूर हो रहे हैं।

इस तरह से हम देखते हैं कि ऐसे बहुत से कारण हैं जिसके चलते गाँवों से शहरों की तरफ पलायन बढ़ रहा है। शहरों पर उनकी क्षमता से अधिक जनसंख्या के दबाव की वजह से बहुत सी समस्याएं पैदा हो रही हैं। आवास और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं गाँव से नगर आने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही हैं। एक सीमा से अधिक जनसँख्या के लिए नगरों में भी लोगों के स्तरीय जीवन निर्वाह के साधन उपलब्ध नहीं हैं। ऐसी दशा में नगरों में आने वाले लोगों को न्यूनतम जीवन निर्वाह स्तर वाले कार्यों के माध्यम से अपना गुजर करना पड़ रहा है। आवास की समस्याएं लोगों को नगरों के बाहर झुग्गी झोपड़ियों में रहने के लिए मजबूर कर रही हैं। वहाँ लोगों को बहुत सी स्वास्थ्य समस्यायों का सामना करना पड़ रहा है।

इसके अलावा गांवों में भी बहुत सी ऐसी समस्याएं हैं, जो गाँव के निवासियों का जीवन दुष्कर बना रही हैं। कर्ज के दुष्चक्र और बदहाल आर्थिक दशा के कारण किसान आत्महत्या कर रहे हैं। विकास का वर्तमान मॉडल नगर केंद्रित होने के कारण गाँवों में अपेक्षित सुविधाओं का विकास नहीं हो सका है। ये सभी समस्याएं विकास के मौजूदा मॉडल पर पुनर्विचार की आवश्यकता पर बल देती हैं। ऐसे में उचित होगा कि गावों के विकास के संदर्भ में महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज की अवधारणा और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता पर पुनर्विचार किया जाय।

महात्मा गाँधी के आदर्श गाँव की परिकल्पना -

देश और समाज के संदर्भ में गाँधी जब भी विचार करते हैं तो गाँव गाँधी के चिंतन का केन्द्रबिन्दु रहा है। महात्मा गाँधी ने भारत में एक ऐसी शासन व्यवस्था की कल्पना की थी, जो भारत की आत्मा के अनुरूप हो। गाँधी जी का कहना था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। गांधीजी मात्र यह नहीं चाहते थे कि इस देश की शासन

Scanned with OKEN Scanner

व्यवस्था में गौरांग महाप्रभुओं को विस्थापित कर यहां के स्थानीय वर्चस्वशाली लोग शासन व्यवस्था में स्थापित हो जाएं, बल्कि शासन व्यवस्था का व्यक्ति और समाज के हित में आमूलचूल परिवर्तन ही उनका एकमात्र लक्ष्य था। गांधीजी के अनुसार असली भारत गांव में ही निवास करता है। गाँवों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाए बगैर भारत का विकास संभव नहीं था। गाँव अपनी जरूरत भर का अन्न, कपड़ा और अन्य वस्तुएं गाँव में ही पैदा करने में सक्षम होने चाहिए। गांधीजी का मानना था कि राष्ट्र का निर्माण पूरी तरह से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के पुनर्निर्माण पर निर्भर करता है। गांधी के ग्राम स्वराज और ग्रामीण पुनर्निर्माण की अवधारणा के पीछे गांधी का अनुभवजन्य विचार था। गांधी ने ग्रामीण जीवन को बहुत करीब से देखा था। उसकी अच्छाइयों, बुराइयों, समस्याओं, जरूरतों और संभावनाओं को बहुत गहराई से महसूस किया था। उन्होंने चंपारण, सेवाग्राम और वर्धा में ग्राम जीवन के अपने प्रयोगों और उससे उपजे अनुभवों के आधार पर ग्रामीण पुनर्निर्माण की संकल्पना की नींव रखी थी।

गाँधी के विचार उनके लेखन में लगातार प्रतिध्वनित होते रहे। उन्होंने अखबारों में लिखे अपने लेखों, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय अपने समकालीन समर्थकों और विरोधियों को लिखे पत्रों तथा हरिजन और यंग इंडिया में लिखे लेखों में गाँव के प्रति अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से रखा है। उनके लिए जीवन जीने की सर्वोत्तम दशाएं गाँव में ही उपलब्ध हो सकती थीं। एक इकाई के रूप में स्वालंबन और आत्मनिर्भरता गाँव की अपरिहार्य विशेषता होनी चाहिए। गाँव के निवासी को उसी गाँव में उपजा हुआ अन्न खाना चाहिए तथा उसी गाँव का बना हुआ वस्त्र पहनना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसकी अन्य जरूरतें भी उसी गाँव से पूरी होनी चाहिए। अन्य दूसरे गाँव एक दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक दूसरे के पूरक होने चाहिए। अपने आप में आत्मनिर्भर और स्वावलंबी होने के बावजूद गाँवों में पारस्परिक निर्भरता भी होनी चाहिए। जो वस्तु उस गाँव की अपनी जरूरत से अधिक उत्पादित होती हो उसे दूसरे गाँव को देनी चाहिए। प्रत्येक गाँव इन तरह की साझीदारी करते हुए परस्पर एक दूसरे पर निर्भरता के साथ स्वावलंबी बने रहेंगे। यानी अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं के संबंध में प्रत्येक गाँव दूसरे पर निर्भर हुए बिना अपने को आत्मनिर्भर बनाये रखेगा तथा अपनी गौड़ आवश्यकताओं के लिए दूसरे गाँवों पर निर्भर होकर अन्योन्याश्रितता को भी बनाये रखेगा।

भारतीय समाज में व्याप्त संरचनागत विषमता को भी गाँधी बहुत अच्छी तरह से समझते थे। इसलिए उन्होंने ग्राम स्वराज की अपनी अवधारणा में एक ऐसे गाँव की कल्पना की है, जहाँ ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा और जात-पाँत के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव न किया जाता हो। परम्परागत भारतीय समाज में इस तरह के बहुत से भेदभाव प्रचलित थे। गाँधी का आदर्श गाँव इस तरह के तमाम भेदभावों से पूरी तरह से मुक्त था। सभी लोग एक दूसरे के साथ मिलजुलकर सहयोग के आधार पर जीवन-यापन करते थे। किसी भी तरह के छुआछूत या अश्पृश्यता के लिए गाँधी के आदर्श गाँव में कोई भी जगह नही थी। सभी लोग शिक्षित थे और एक दूसरे के साथ पूर्ण सद्भावना के साथ जीवन यापन करते थे। किसी भी तरह की चोरी, अपराध या व्यभिचार के लिए गाँधी के आदर्श गाँव में कोई गुंजाइश नहीं थी। किसी व्यक्ति के लिए अपने कार्य या व्यसाय का चयन मात्र उसके अपने व्यक्तिगत उन्नति को दृष्टि में रख कर नहीं करना था, बल्कि समाज की सेवा के माध्यम से अपने योगदान को पहचानने की कोशिश करनी थी। व्यक्तिगत कौशल की अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से सिर्फ एकाकी व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज को केंद्र में रखते हुए होनी थी। अत्यधिक कुशल व्यक्तियों द्वारा उत्पादित उनकी आवश्यकता से अधिक उत्पादन को दूसरे जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाने के लिए गाँधी एक ट्रस्ट की व्यवस्था की भी बात करते हैं।

गाँधी अपनी ग्राम स्वराज की इस परिकल्पना को साकार करते हुए श्रेष्ठ और समर्थ भारत का निर्माण करना चाहते थे। इसलिये गाँधी विकास की किसी भी योजना के लिए गाँव को केन्द्रबिन्दु मानते हुए आगे बढ़ना चाहते थे। उनका कहना था कि योजनाबद्ध तरीके से गांवों के पुनर्निर्माण के माध्यम से ही भावी भारत के निर्माण के स्वप्न को साकार किया जा सकता था। चार्ल्स मेटकॉफ ने भारतीय गाँवों को एक गणतंत्र की संज्ञा दी थी। महात्मा गाँधी ने भी गाँवों की परिकल्पना एक गणतंत्र के रूप में की थी। एक गणतंत्र के रूप में यह जरूरी है कि अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले संसाधनों की पूर्ति हेतु गाँव के पास राजस्व के अपने स्रोत भी हों। गाँधी गाँवों के पुनर्निर्माण की योजना में इन स्रोतों के विकास की भी बात करते हैं। गाँवों में स्वास्थ्य और सफाई की सुविधाएँ भी होनी चाहिए। गाँव में कुटीर उद्योगों का विकास तथा साफ सफाई की व्यवस्था गाँधी के गाँव की परिकल्पना के केन्द्रीय विंदु थे। एक स्वस्थ और संतुलित जीवन के विकास लिए यह जरूरी है कि मनुष्य के परिवेश में नियमित रूप से समुचित साफ सफाई की व्यवस्था हो। यह स्वच्छता व्यक्ति की अपनी साफ सफाई से शुरू होकर उसके घर और

Scanned with OKEN Scanner

पूरे गाँव की सफाई तक विस्तारित है। यह व्यक्ति और गाँव के सभी निवासियों के स्वस्थ और रोगमुक्त जीवन के लिए आवश्यक है। गाँव के कुटीर या घरेलू उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण बेरोजगारी से भी मुक्ति पाई जा सकती है। गाँव में हथकरघा उद्योग, साबुन निर्माण, माचिस बनाने का काम, पशुपालन, खेती, डेरी उद्योग तथा खादी से जुड़े कामों के माध्यम से लोगों के लिए रोजगार पैदा किया जा सकता है। गाँधी जी गाँव के इन कुटीर उद्योगों में न्यूनतम मशीनरी के इस्तेमाल के पक्षधर थे। आपका मानना था कि मनुष्य श्रम को मशीनों से विस्थापित करने वाले बड़े-बड़े उद्योग धंधे दरअसल श्रमिकों के शोषण का माध्यम हैं।

गाँधी का ग्राम स्वराज –

ग्राम स्वराज में ग्राम के मायने गाँव और स्वराज के मायने अपना शासन या स्व-शासन है। ग्राम स्वराज के माध्यम से गाँधी एक ऐसी शासन व्यवस्था की कल्पना करते हैं, जिसमें गाँव पर गाँव के निवासियों का ही नियंत्रण या शासन हो। गाँधी की नज़र में यह शासन एक तरह का आत्म अनुशासन है। यह अनुशासन अन्तर से बाहर की तरफ प्रेरित आत्मसंयम है। ग्राम स्वराज को प्राप्त करने के लिए यह आत्म अनुशासन आवश्यक है। इस आत्म अनुशासन की बदौलत ही व्यक्ति समाज की बहुत सी बुराइयों से लड़ने में सक्षम हो पाता है। गाँधी जब स्व-शासन की बात करते हैं तो यह पूरी तरह से अपने पर शासन होता है, न कि दूसरों पर। ग्राम स्वराज में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या स्त्री – पूरी तरह से स्वतंत्र होता है। किसी का किसी पर कोई नियंत्रण नहीं होता। सभी व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण रखते हुए गाँव के लिए अपना महत्तम योगदान देने के लिए प्रस्तुत रहते हैं। राजनीतिक रूप से स्वराज के मायने हैं कि व्यक्ति आत्म संयम का पालन करते हुए निर्णय लेने की प्रक्रिया में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे। गाँधी के स्वराज की परिकल्पना में शासन या सत्ता पूरी तरह गाँव के नियंत्रण में होती है। इस स्वराज में केंद्रीय सत्ता या सरकार का न्यूनतम हस्तक्षेप होता है। निर्णय लेने का अधिकार पूरी तरह से लोगों के हाथों में ही होता है।

भारतीय गाँव में तमाम प्राकृतिक संसाधन होने के बावजूद गाँव के निवासी भूख, अशिक्षा, बेरोजगारी और तमाम तरीके की स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त रहे हैं। गांधी गाँव के निवासियों को इन समस्त समस्याओं से मुक्त करने के लिए ग्रामीण पुनर्निर्माण की एक ऐसी परियोजना पर काम करना चाहते थे, जो न सिर्फ ग्रामीणों को उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को उनके गाँव की सीमा के अंदर ही पूरी कर सके, बल्कि संपूर्ण गाँव को भी इस संबंध में आत्मनिर्भर बना सकें। यही वजह है कि महात्मा गाँधी गाँव की आर्थिक आजादी को राजनीतिक आजादी के ऊपर वरीयता देते थे। गाँधी के अनुसार बगैर आर्थिक आजादी के राजनीतिक आजादी का कोई मूल्य नहीं है। इसीलिए गाँधी गाँव में कृषि कार्य में लगे लोगों को भी अतिरिक्त श्रम के रूप किसी न किसी कुटीर उद्योग के माध्यम से अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके अलावा गाँव के ज्यादातर लोग परम्परागत रूप से किसी न किसी हस्तशिल्प में कुशलता रखते हैं। गाँधी जी इस परम्परागत कौशल का गाँव के हित में विकास कर इसे गाँव के पुनर्निर्माण का माध्यम बनाना चाहते थे। किसी भी कुटीर उद्योग से उत्पन्न हुए अतिरिक्त उत्पादन का इस्तेमाल गाँधी पहले व्यक्ति के लिए, उसके बाद पडोसी के लिए, उसके बाद गाँव के लिए, फिर यदि इसके बाद भी कुछ अतिरिक्त शेष रहे तो प्रान्त के लिए करने की बात करते थे। गाँधी जी का मानना था समस्त आर्थिक क्रिया कलाप मानवता की सेवा के लिए हैं, न कि आर्थिक लाभ और पूँजी जमा करने के लिए। गाँधी परम्परागत रूप से उपलब्ध तमाम तरह के हस्तशिल्पों का इस्तेमाल सिर्फ आर्थिक क्रिया कलाप के रूप में ही नहीं करना चाहते थे, बल्कि वे इसके प्रशिक्षण के माध्यम से बच्चों की बुद्धि के विकास की भी बात करते थे।

इसके अतिरिक्त गाँधी अपने ग्राम स्वराज की परिकल्पना में स्थानीय उत्पादों के माध्यम से स्वदेशी की अवधारणा पर भी बल देते हैं। शासन-सत्ता के पूरी तरह से विकेन्द्रीकरण की बात करते हुए गाँव के लोगों को अपने सम्बंध में निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करने की वकालत करते हैं। इस तरह से प्रकृति के साहचर्य में परम्परागत तरीकों से स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए गाँधी अपने ग्राम स्वराज के माध्यम से सतत विकास का एक वैकल्पिक माडल प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष-

विकास का वर्तमान वैश्विक परिदृश्य बहुत आशान्वित करने वाला नहीं है। आज तमाम तरह के विकास माडलों को अपनाने के बावजूद उसका अंतिम लक्ष्य 'मानव मात्र का कल्याण' कहीं प्राप्त होता नहीं दिख रहा है। पूँजीवाद विकास के माडलों ने बड़े-बड़े नगर बसाये है, बड़े कारखाने लगाये हैं, यातायात, संचार और विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व क्रान्तियाँ की हैं और क्रांतिकारी बदलाव लाये हैं, परन्तु, इन सभी उपलब्धियों के बीच मानव और मानवता लगातार अवमूल्यित हुए हैं। इसका कारण है कि विकास के किसी भी माडल के केन्द्र में मनुष्य नहीं रहा है। गाँधी का ग्राम स्वराज ग्रामीण पुनर्निर्माण के माध्यम से विकास का एक ऐसा वैकल्पिक माडल प्रस्तुत

Scanned with OKEN Scanner

करता है, जिसके केंद्र में मानव और मानवता है। यह व्यक्ति के किसी भी तरह के शोषण के विरुद्ध सभी मनुष्यों को समान मानते हुए, उनके आपसी सहयोग के माध्यम से संसाधनों का विवेकपूर्ण दोहन करते हुए प्रकृति के साहचर्य में सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करने वाला माडल है। इस तरह से महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज की परिकल्पना अपने संसाधनों को लीलती जा रही आज की तेज भागती दुनिया के लिए सतत विकास का एक ठोस वैकल्पिक माडल प्रस्तुत करती है, जो वर्तमान परिदृश्य में पूरी तरह से प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1-गाँधी वांग्मय(1964).भाग 10,नवजीवन प्रेस ट्रस्ट,अहमदाबाद
2-गाँधी,एम.के.(1949).हिन्द स्वराज,नवजीवन प्रेस ट्रस्ट,अहमदाबाद
3-Dube, S. C. (1988). Modernization and Development: The Search for Alternative Paradigms Tokyo: The United Nations University.
4-Gandhi, M. K. (1928, 28th June). Young India.
5-Gandhi, M. K. (1962). Village Swaraj. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.

Scanned with OKEN Scanner